भगवान को हम क्यों दोष देते

जब हम कोई फिल्म देख रहे होते हैं तो उसे अगर हम शुरू से देखें तो वो फिल्म हमें ज़्यादा अच्छे से स्पष्ट होगी। वहीं अगर उस फिल्म को हम बीच में से देखेंगे तो एक सीन दूसरे सीन के साथ मैच नहीं करेगा और हम बोर हो जायेंगे। इसलिए सभी फिल्म की स्टार कास्ट या फिल्म जब से शुरू होती है तब से देखना चाहते हैं ताकि फिल्म समझ में आ जाये। अब हम भी जब किसी मनुष्य के किए कर्म की पूरी फिल्म देखें तब समझ आये ना कि इसकी कौन सी सीन किस सीन के साथ जुड़ी हुई है! इसी तरह हमारे कितने सीन तो मिस हो गये हैं, इसीलिए हमें किसी के कर्म का कुछ समझ नहीं आता। अब ये तर्क-वितर्क का प्रश्न है कि बात तो सही है कि इस समय हर मनुष्य के साथ जो घटनाएं हो रही हैं, जो कुछ ऊपर नीचे हो रहा है हम भी उसका लास्ट सीन देख रहे हैं, उसी के आधार पर दुःखी या खुश होते हैं। लेकिन पता नहीं कितने अनसीन, सीन हमसे छूट गये हैं। हम उसका लास्ट एपीसोड देख रहे हैं तो हमें कैसे पता चलेगा कि इस व्यक्ति के साथ ऐसा क्यों हो रहा है। यहाँ थोड़ा सा बुद्धि से समझने की आवश्यकता है कि हरेक घटना जो जिसके साथ होती है उसके पिछले किए गए कुछ कर्म जिसके सीन जो उसे नहीं याद हैं के द्वारा होती है। लेकिन हम तो वही देख रहे हैं कि फलाना व्यक्ति तो इतना पुण्य का काम करता है, अच्छे से अच्छे कर्म करता है, फिर भी उसके साथ बुरा कैसे हो सकता है! लेकिन हो रहा है और जब हमें समझ में नहीं आता तो इसका सारा दोष हम परमात्मा पर डाल देते हैं। अगर आपको याद हो तो बहुत समय पहले इमैजिन टी.वी. पर एक धारावाहिक आता था जिसका नाम था 'राज़ पिछले जन्म का'। उसमें जो हीलर थी, वो जब भी किसी को पास्ट लाइफ में ले जाती थी तो वो आत्मायें वहाँ पर जाकर अपने किए हुए कर्म को बड़े आराम से देख पाते थे और वो बताते हुए रोते थे कि हाँ ये ऐसी घटना हुई। लेकिन हीलर उनको ये थॉट देती कि आप वहाँ पर जाइये, वहाँ जाकर उस शरीर को ध्यान से देखिए और जो घटना हुई है उसे भूलने के लिए पूरी तरह से उस सीन को खत्म करने की कोशिश करिये और ये महसूस करिये कि मैं उससे बाहर निकल चुकी हूँ। और जो भी मनुष्य अपना पास्ट लाइफ रिगरेशन करा रहे होते थे वो वापिस आने के बाद बहुत रोते थे और लाइट फील करते थे। इसे देखकर एक बात और सिद्ध हो जाती थी कि मनुष्य कभी भी दूसरी योनियों में नहीं जाता। मनुष्य, मनुष्य ही बनता है तभी उसके कर्म उसको खींचते हैं। आज भी जिसको पानी का फोबिया है या सबकुछ खुला होने के बाद भी उसे सफोकेशन फील होती है, तो कोई न कोई घटना है जो पास्ट में उसके साथ हुई लेकिन वो एपिसोड, वो सीन याद ना होने के कारण वो परेशान रहते हैं। आज की लाइफ को आप ध्यान से देखिये कि हर समय आपके मन से, वचन से, कर्म से कितनी गलतियां हो रही हैं। अब वो हर गलती, हमारा पास्ट हमारे अन्दर ही तो जाकर सेव हो रहे हैं। और टाइम टू टाइम हमारे सामने कर्म के रूप में आ जाते हैं।

आजकल बहुत सारे शोध दुनिया में चल रहे हैं मुनष्य के जीवन और मृत्यु को लेकर, उसके कर्म को लेकर, कर्म की गति को लेकर। हर कोई इस बात के पीछे पड़ा हुआ है लेकिन कोई भी इसके निष्कर्ष पर पहुंचता हुआ नहीं दिखता। किन्तु सुलझे-अनसुलझे पहलुओं को कुछ शोधकर्ताओं ने समझने की कोशिश की। जिसमें पूर्व जन्म या पास्ट लाइफ रिगरेशन के आधार पर थोड़ा बहुत इस निष्कर्ष पर वैज्ञानिक पहुंच रहे हैं। इन्हीं बिन्दुओं को लेकर आज हम चर्चा करेंगे।

हमारी वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी ऊषा दीदी जी का एक विडियो सुना जिसमें उन्होंने कहा कि अभी तो शोधकर्ताओं की टीम ने यहाँ तक भी ढूंढ़ निकाला है कि मनुष्य जब शरीर छोड़कर जाता है (जो भी पास्ट लाइफ रिगरेशन कराते हैं उनका ये कहना है) वो एक बहुत सुन्दर लाइट की दुनिया में जाता है जहाँ उनका सामना एक बहुत चमकीली लाइट से होता है जो उनके ऊपर बहुत सारा प्यार बरसा रही है। उनका कहना है कि ये ही बस परमात्मा है क्योंकि वो सिर्फ प्यार और प्यार बरसा रहा होता है। उनका अनुभव ये भी कहता है कि उस समय हम सभी इतनी गहरी शांति और पवित्रता की अनुभूति में होते हैं कि हमारे सारे किए हुए अच्छे-बुरे कर्म हमारे सामने एक रील की तरह चलते जाते हैं और उनको देखकर हम इतना ज़्यादा दुःखी होते या सोचने लग जाते कि हाय! मैंने इतना बुरा कर्म किया! अब ये अनुभव उन आत्माओं का है जिन्होंने ऐसी हीलिंग करवायी और पिछले जीवन में गये, अब इसमें कितना सत्य है और कितना असत्य है इसमें हमको नहीं जाना है। हमको इसमें सिर्फ ये देखना है कि जो भारत में पास्ट लाइफ रिगरेशन होता या विदेशों में होता, दोनों में एक चीज़ कॉमन है कि अपने आपको लाइट फील करते और उनको ये भी पता चल जाता है कि इसकी वजह से ये हुआ। तो इतना तो हम आत्मायें कह सकती हैं कि हम इस समय भी जो कोई कर्म कर रहे होते हैं तो क्या इस समय भी परमात्मा हमारी बुद्धि से काम करवा रहा है खासकर गलत काम? अरे, परमात्मा तो प्यार का सागर है जो आत्मायें कह रही हैं। तो परमात्मा हमसे भी तो ऐसे ही कर्म करायेगा ना! अगर कर्म करायेगा तो। कहने का भाव ये है कि परमात्मा का सिर्फ एक काम है शक्ति देना, प्यार देना। उसको एक्शन में लाने का, कर्म व्यवहार में लाने का काम हमारा है। हमें आज भी ये सब पता चलता है कि ये काम गलत है और ये काम सही है। लेकिन हम फिर-फिर वही काम करते हैं क्योंकि आदत बन गई है। और उसका परिणाम हम देखते हैं कितना बुरा होता है।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आज चक्र का अंतिम समय चल रहा है, इसमें परमात्मा कर्मों की गति का ही तो ज्ञान देने आये हैं और हमें यही बार-बार समझा रहे हैं कि अगर इस समय हमने अच्छे कर्म कर लिए मन से, वचन से, कर्म से पवित्र बन कर्म कर लिए, शुभभावना-शुभकामना के साथ कर लिए तो यही कर्म आपके रिएक्शन के साथ आपका अच्छा भाग्य निर्माण करेंगे क्योंकि शुभ भावना का फल शुभ भावना। इससे हमारे जन्म सुधर जायेंगे। वो सिर्फ बता रहे हैं और समझ दे रहे हैं और उसको करने की ताकत दे रहे हैं। अगर आपने अपने आपको जगाकर इसे समझ लिया तो उद्धार हो जायेगा। सद्गति हो जायेगी माना जीवन बदल जायेगा। लेकिन परमात्मा ये नहीं डिसाइड करते कि आप क्या करें, क्या नहीं करें। वो सिर्फ और सिर्फ आपको जानकारी या समझ देने के लिए किसी के तन को डिसाइड करते हैं। और इस धरती को स्वर्ग बनाने के लिए अपना आना निश्चित करते हैं बाकी परमात्मा किसी के कर्म में इंटरफेयर नहीं करते।

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दे

टूण्डला-रामनगर। हीरो कंपनी श्री कृष्णा ऑटो मोबाइल्स टूण्डला के मालिक श्रीनिवास यादव को परमात्म परिचय की पुस्तक भेंट करते हुए ब्र.कु. विजय बहन।

ईश्वरीय शक्तियों के सामने आसुरी शक्तियां नष्ट हो जाती हैं

मन की बात
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : हमारे घर में एक माता जब भी आती हैं तो वो मुझे कहती हैं कि तुम्हारी अपनी जेठानी तुम्हें शांति से कभी रहने नहीं देगी और वो ये भी कहती हैं कि तुम्हारी जेठानी ने कोई जादू टोना ज़रूर करवा दिया है और मैं भी देख रही हूँ कि जब से मैं इस घर में आई हूँ तब से वो मुझसे नाराज़ ही चलती हैं, ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : यह तो आपकी एक परेशानी है, पर ऐसी ही एक चाची की बात थी कि उसने कह दिया मैं तुम्हें ज़िन्दा छोड़ूंगी नहीं। और उसने एक-एक को तंग करना शुरू किया, तंत्र मंत्र की शक्ति से। कुछ लोग इन बातों को नहीं मानते। अब वो मानें या ना मानें लेकिन वो नष्ट तो होते गए बिचारे। क्योंकि इन्हें सारी प्रॉपर्टी चाहिए थी कि उनकी प्रॉपर्टी हमारे बच्चों को मिले। तो पहले तो मैं जेठानी को और चाची जी को एक बात कहना चाहूंगा, क्योंकि ये चीज़ें लोग सम्पत्ति के लिए ही करते हैं। दूसरे की सम्पत्ति पाकर आपके बच्चे सुखी नहीं होंगे। बिल्कुल ये कर्मों का सिद्धान्त है। इसको जान ही लेना चाहिए। अगर आप दूसरों को कष्ट दे रहे हैं, दूसरों को बिल्कुल उजाड़ देना चाहते हैं, दूसरों के परिवार को बिल्कुल नष्ट कर देना चाहते हैं, तो वही चीज़ आपके साथ भी होगी। ये भी कर्म की गति सभी को जान लेनी चाहिए। और तीसरी बात जैसे ही कोई व्यक्ति दूसरे के लिए ये सोचता है कि इन्हें नष्ट करना है, इनको मरवाना है, तो उसके मन में अशांति तो पहले ही प्रारम्भ हो जाती है। इसीलिए मैं सभी माताओं-बहनों को कहूंगा कि तुम्हें देश का निर्माण करना है। ये काम छोड़ देने हैं तंत्र-मंत्र के, ये बहुत बुरी चीज़ है। ये तो पापियों का धन्धा है, राक्षसों का धंधा है। ये मनुष्यों का धन्धा नहीं है। इसको छोड़ एक श्रेष्ठ पथ पर कदम रखो। जो हमारे पास है उसको बढ़ाया जा सकता है। बहुत लोग ऐसे हैं जिनके पास कुछ भी प्रॉपर्टी नहीं होती, ज़मीन होती ही नहीं। मेहनत करके, कमा के, यानि पचास साल तक पहुंचते-पहुंचते दुनिया खड़ी कर देते हैं वो लोग, तो उसमें बहुत सुख मिलता है। तो उनके बच्चे भी वैसे ही मेहनती होते हैं। वैसे ही क्रियेटर बन जाते हैं फिर। और जो दूसरों का धन हड़पते हैं, वो उन्हें नष्ट करते हैं। शराब पीयेंगे, जुआ खेलेंगे, बल्कि माँ-बाप को मारेंगे, मर्डर करते हैं। ये उनके उन कर्मों का ही परिणाम होता है जो माँ-बाप ने किया है, इसीलिए महान बनना चाहिए। मैं तो सभी मातृ शक्ति को कहूंगा कि तुम भारत माता हो और भारत ये एक महान देश है। इसकी माताएं भी महान जो अपनी संतान को महान बनाये। दूसरे की सम्पत्ति पर नज़र ना रखें। उससे कुछ मिलने वाला नहीं है। इस केस में इनको ऐसा करना चाहिए कि इन्होंने अवश्य राजयोग के पथ पर कदम रख दिया होगा। इसलिए मन में एक संकल्प कर लें कि राजयोग की शक्ति जो संसार में सबसे बड़ी शक्ति है, जिससे हमारा जुड़ाव भगवान के साथ हो जाता है और वो भगवान हमारा साथी बन जाता है। मुझे इससे तंत्र-मंत्र की शक्ति को परास्त कर देना है। जेठानी करती रहे प्रयोग, मूठ मरवाती रहे और मूठ फेल होती रहे। ये बहुत जगह हो चुका है। अनुभव हैं ब्रह्माकुमारों के जो अच्छे योगी हैं। मूठ मारी गई फेल हो गई, कुर्सी को जाकर लगी, उसको तो लगी ही नहीं। कितनों की फेल हुई है। तो ऐसा नहीं, तंत्र-मंत्र की शक्ति कोई ऑलमाइटी पॉवर है, उससे किसी को मारा जा सकता है। ये विश्वास बिल्कुल खत्म कर दें। और अपने योग की शक्ति को बढ़ाएं। और ज़्यादा अभ्यास करें मैं मा. सर्वशक्तिवान हूँ। सवेरे उठकर इक्कीस बार याद करें और सोने से पहले विशेष रूप से इक्कीस बार याद करके मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, अंगुली के इशारे से चारो ओर सात बार लाइन खींच दें अपने घर के चारो ओर, जैसे शक्तियों की लाइन खींच दी हमने और संकल्प कर दें कि इस रेखा के अंदर कोई तंत्र-मंत्र या भूत प्रेत की शक्ति प्रवेश नहीं कर सकेगी। बस सब सेफ हो जायेगा और जेठानी को जायेगा वापिस। अब मैं कहूंगा कि आप बिल्कुल निश्चिंत रहें और बाबा की शक्तियों में विश्वास रखें। अपने घर में योग का वातावरण बनायें, तो उनकी सारी शक्तियां फेल हो जायेंगी।

प्रश्न : मैं जो पढ़ती हूँ वो मुझे सब अच्छे से समझ आता है, लेकिन जब क्वेश्चन पेपर सॉल्व करती हूँ तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने कुछ पढ़ा ही नहीं। इससे मुझे बहुत टेंशन हो जाती है। कृपया बतायें कि ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : कई विद्यार्थी अपनी-अपनी अच्छी प्रेपरेशन भी करते हैं और कॉन्फिडेंट भी रहते हैं कि हम सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे। ऐसे में पहले तो मनुष्यों को अपने मन को बहुत शांत करके ही एग्ज़ाम में बैठना चाहिए। कइयों को जो नर्वस होने का संस्कार होता है ना, ये नर्वसनेस बहुत चीज़ों को भूला देती है। फिर जल्दबाज़ी, बहुत सारे क्वेश्चन हैं, 300 हैं और टाइम इतना ही है। फटाफट करो, फटाफट करो, जब हम इस तरह अपने मन को तेज़ दौड़ा देते हैं तो बुद्धि की शक्ति क्षीण पड़ने लगती है। इसलिए पहली चीज़ इन सब विद्यार्थियों के लिए कि चित्त को शांत और धैर्य रखो। बड़े आराम से एक-एक क्वेश्चन हल करते जायें, स्पीड आपे ही बढ़ती जाती है। जो अच्छे ड्राइवर होते हैं वो गाड़ी को पहले धीरे चलायेंगे, फिर धीरे-धीरे स्पीड बढ़ायेंगे। तो यहाँ मैं कहना चाहता हूँ कि हमें किसी भी काम में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए, बहुत धैर्यचित्त होकर अपने कार्य को करना चाहिए। इस चीज़ की बहुत ज़रूरत है। और स्टडी करते हुए इस स्वमान का अभ्यास करें कि मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी हूँ, यानि अपनी मालिक हूँ, मैं राजा हूँ, ये भृकुटि मेरा सिंहासन है, मैं यहाँ अंदर विराजमान हूँ, और मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, फिर मन-बुद्धि को आदेश दें कि जो मैं पढ़ूं, हे मेरी बुद्धि, तू उसे ग्रहण कर लेना। एग्ज़ाम के समय सब इमर्ज कर लेना। और जब एग्ज़ाम देने लगें तब भी ये संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, स्वराज्याधिकारी हूँ, मन-बुद्धि की मालिक हूँ, हे मेरी बुद्धि, जो मैंने पढ़ा है वो सब इमर्ज कर ले। अपने को भी संकल्प दे दें कि अब मेरी बुद्धि में सब इमर्ज हो गया है। बस फिर सब तुरंत याद आने लगेगा।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'
24x7 Ad. Free Value Based Channel
Peace of Mind CHANNEL
TATA SKY 1065 | airtel digital TV 678 | VIDEOCON d2h 497 | dishtv 1087
+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in